Office of The sadr Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت
Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश खुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक **13.01.17** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

इस्लाम की शिक्षा ही है जिसने दुनया को शांति एवं अल्लाह की ओर लाने वाला बनाना है। दुनया को एक समय पर आभास हो जाएगा कि इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं कि इस्लाम की शिक्षा पर ही विचार करें तथा उसके अनुसार कर्म करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- कुछ लोग समझते हैं कि दीन तथा धर्म उनकी स्वतंत्रता में रुकावट है तथा उनपर पाबन्दियाँ लगाता है परन्तुं अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ अर्थात, दीन पर चलने में तुम पर कोई भी तंगी का पहलू नहीं डाला गया बल्कि शरीअत का उद्देश्य तो इंसान के बोझों को कम करना है और केवल यही नहीं बल्कि उसे हर प्रकार की कठिनाईयों तथा ख़तरों से बचाना है। अतः अल्लाह तआला के इस निर्देश में स्पष्ट किया गया है कि यह दीन-ए-इस्लाम जो तुम्हारे लिए अवतरित किया गया है, इसमें कोई भी ऐसा आदेश नहीं जो तुम्हें कठिनाई में डाले अपितु छोटे से छोटे आदेश से लेकर बड़े से बड़े आदेश तक, प्रत्येक आदेश रहमत और बरकत के लिए है। अतः इंसान की सोच ग़लत है, अल्लाह तआला का कलाम ग़लत नहीं हो सकता। यदि अल्लाह तआला के बन्दे होकर हम उसके आदेशानुसार नहीं चलेंगे तो अपना नुक़सान करेंगे। यदि इंसान बुद्धि से काम नहीं लेगा तो शैतान, जिसने पहले दिन से ही यह निश्चय किया हुआ है कि मैं इंसानों को पथभ्रष्ट करके हानि पहुंचाऊंगा, वह इंसान को तबाही के गढ़े में गिराएगा। अतः यदि इस हमले से बचना है तो अल्लाह तआला के आदेशों को मानना आवश्यक है। कुछ बातें प्रत्यक्षतः छोटी लगती हैं परन्तु समय के साथ साथ इनको छोटी समझने के कारण, इनके परिणाम अत्यंत भयावह स्थिति धारण कर लेते हैं। अतः एक मोमिन को कभी भी, किसी भी आदेश को छोटा नहीं समझना चाहिए। आजकल हम देखते हैं कि दुनया के अधिकांश लोग दीन से दूर हट गए हैं इस कारण से उनके बुराई तथा अच्छाई के स्तर भी बदलते जा रहे हैं। उदाहरणतः इस ज़माने में हम देखते हैं कि स्वतंत्रता एवं फ़ैशन के नाम पर स्त्री एवं पुरुषों में नग्नता फैल रही है। प्रगति शील होने की निशानी यह है कि सार्वजनिक निर्लज्जता की जाए, लज्जा नाम की कोई चीज़ नहीं रही और स्वभाविक रूप से इसका प्रभाव फिर हमारे बच्चों और बच्चियों पर भी होगा, जो यहाँ रहते हैं और एक सीमा तक हो भी रहा है। कुछ बच्चियाँ जब जवानी में क़दम रखने लगती हैं तो मुझे लिखती हैं कि इस्लाम में पर्दा क्यूँ अनिवार्य है? क्यूँ हम तंग जीन्स तथा टॉप पहन कर बिना बुर्क़े या कोट के घर से बाहर नहीं जा सकतीं? क्यूँ हम यहाँ योरुप की आज़ाद लड़कियों जैसा लिबास नहीं पहन सकतीं? पहली बात तो हमें सदैव यह याद रखनी चाहिए कि यदि हमने दीन पर क़ायम रहना है तो फिर हमें दीन की शिक्षाओं के अनुसार काम करना होगा। यदि हमने यह घोषणा करनी है कि हम मुसलमान हैं तथा दीन पर क़ायम हैं तो फिर पाबन्दी भी आवश्यक है। अल्लाह तआला तथा उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेशों का पालन भी अनिवार्य है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हया (लज्जा) ईमान का अंश है। तो लज्जावान लिबास और पर्दा हमारे ईमान को बचाने के लिए आवश्यक है। यदि प्रगति शील देश, स्वतंत्रता एवं उन्नति के नाम पर अपनी हया का विनाश कर रहे हैं तो उसका कारण यह है कि ये दीन से भी दूर हट चुके हैं। अतः एक अहमदी बच्ची जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है, उसने यह प्रतिज्ञा की है कि मैं दीन को दुनया पर प्राथमिकता दूँगी। एक

अहमदी बच्चे ने, जिसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है, एक अहमदी व्यक्ति ने, पुरुष ने महिला ने माना है, उसने दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का एहद किया है और यह प्राथमिकता देना उसी समय होगा जब दीन की शिक्षानुसार कर्म करेंगे। यह भी हमारा सौभाग्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें प्रत्येक बात खोल खोल कर बयान फ़रमा दी है। अतः इस बेपर्दगी और बेहयाई (निर्लज्जता) के बारे में आप एक स्थान पर बयान फ़रमाते कि योरुप की भांति बेपर्दगी पर भी लोग ज़ोर दे रहे हैं परन्तु यह कदापि उचित नहीं। यही महिलाओं की स्वतंत्रता, पाप और दुराचार की जड़ है। जिन देशों ने इस प्रकार की स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया है, तनिक उनके शिष्टाचार का अनुमान लगाओ। यदि उसकी स्वतंत्रता एवं बेपर्दगी से उनका सम्मान तथा सदाचार बढ़ गया है तो हम मान लेंगे कि हम ग़लती पर हैं परन्तु यह बात बड़ी ही साफ़ है कि जब पुरुष एवं स्त्री जवान हों तथा स्वतंत्रता और बेपर्दगी भी हो तो उनके सम्बंध कितने भयानक होंगे। बुरी दृष्टि डालना तथा मनोवृत्ति के कारण अधिकांशतः पाप में लिप्त हो जाना इंसान की प्रवृत्ति है। फिर जिस अवस्था में पर्दे में असंतुलन होता है तथा पाप और दुराचार में लिप्त हो जाते हैं तो स्वतंत्रता होने पर क्या कुछ न होगा। पुरुषों की अवस्था के बारे में विचार करो कि वे किस प्रकार बे-लगाम घोड़े की भांति हो गए हैं। न ख़ुदा का भय रहा है, न आख़िरत में विश्वास है, सांसारिक आनन्द को अपना मअबूद (उपासय) बना रखा है। अतः सर्वप्रथम आवश्यक है कि स्वतंत्रता एवं बेपर्दगी से पहले पुरुषों के शिष्टाचार ठीक करो। यदि यह ठीक हो जावे तथा पुरुषों में कम से कम इतनी शक्ति हो कि वे अपनी मनोवृत्तियों में लिप्त न हो सकें तो उस समय इस वार्ता को छेड़ो कि क्या पर्दा अनिवार्य है कि नहीं, अन्यथा वर्तमान परिस्थितयों में इस बात पर ज़ोर देना कि आज़ादी तथा बेपर्दगी हो तो मानो बकरियों को शेर के आगे रख देना है। इन लोगों को क्या हो गया है कि किसी बात के परिणाम पर विचार नहीं करते। कम से कम अपने अंतर्मन से ही काम लें कि क्या पुरुषों की दशा ऐसी सुधर चुकी है कि महिलाओं को बेपर्दा उनके सामने रखा जावे।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आजकल के समाज में जो बुराईयाँ हमें दिखाई दे रही हैं ये हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक एक शब्द का सत्यापन करती हैं। अतः प्रत्येक अहमदी लड़की, लड़के तथा पुरुष और महिला को अपनी हया के स्तर ऊँचे करते हुए समाज की गन्द से बचने का प्रयास करना चाहिए। यह वालिदैन तथा विशेष रूप से माँओं का काम है कि छोटी आयु से ही बच्चों को इस्लाम की शिक्षा तथा सामाजिक बुराईयों के विषय में बताएँ तभी हमारी नस्लें दीन पर क़ायम रह सकेंगी और तथाकथित प्रगति शील समाज के विष से सुरक्षित रह सकेंगी। एक बच्ची ने पिछले दिनों मुझे पत्र लिखा कि मैं बहुत पढ़ लिख गई हूँ तथा मुझे बैंक में अच्छा काम मिलने की आशा है, मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या यदि वहाँ हिजाब लेने और पर्दा करने पर पाबन्दी हो, कोट भी न पहन सकती हूँ तो क्या मैं यह काम कर सकती हूँ? काम से बाहर निकलूँगी तो हिजाब ले लूँगी। कहती है कि मैंने सुना था कि आपने कहा था कि काम वाली लड़कियाँ अपने काम के स्थान पर अपना बुर्क़ा, हिजाब उतार सकती हैं। इस बच्ची में कम से कम इतनी भलाई है कि उसने साथ ही यह भी लिख दिया कि आप यदि मना करेंगे तो काम नहीं करुंगी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- यह एक नहीं कई लड़कियों के सवाल हैं। फ़रमाया- डाक्टर्ज़ को कुछ परिस्थितियों में विवशता होती है वहाँ पर प्रचलित बुर्क़ा अथवा हिजाब पहन कर काम नहीं हो सकता, जैसे कि आप्रेशन करते हुए। परन्तु वहाँ उनका लिबास ऐसा होता है कि सिर पर भी टोपी होती है, मास्क भी पहना होता है, ढीला ढाला लिबास होता है, इसके अतिरिक्त तो डाक्टर भी पर्दे में काम कर सकती हैं। रबवा में हमारी डाक्टर थीं, डा. फ़हमीदा, सदैव हमने उनको पर्दे में देखा है। डा. नुसरत जहाँ थीं, बड़ा पक्का पर्दा करती थीं।

इसी प्रकार मैंने रिसर्च करने वालियों को कहा था कि कोई बच्ची यदि इतनी प्रतिभा शाली है कि रिसर्च कर रही है तथा लैबॉर्ट्री में वहाँ उनका विशेष लिबास पहनना पड़ता है, तो वहाँ वे उसकी आवश्यकतानुसार लिबास पहन सकती हैं, बेशक हिजाब न लें। वहाँ उन्होंने टोपी इत्यादि पहनी होती है लेकिन बाहर निकलते ही वह पर्दा होना चाहिए जिसका इस्लाम ने

आदेश किया है। फ़रमाया- बैंक की नौकरी कोई ऐसी नौकरी नहीं है कि जिसके द्वारा कोई मानव सेवा का काम हो रहा हो। इस लिए साधारण नौकरियों के लिए हिजाब उतारने की अनुमति नहीं दी जा सकती जबकि नौकरी भी ऐसी जिसमें लड़की दैनिक लिबास तथा मेकअप में हो, कोई विशेष लिबास वहाँ नहीं पहना जाता। अतः सदैव याद रखना चाहिए कि हया के लिए हयादार लिबास अनिवार्य है और पर्दे का इस समय प्रचलित तरीक़ा, हयादार लिबास का ही एक भाग है। यदि पर्दे में ढील करेंगी तो फिर अपने हयादार लिबास में भी कई कठिनाईयाँ बताकर बदलाव पैदा कर लेंगी तथा फिर इस समाज के रंग में रंगीन हो जाएँगी जहाँ पहले ही बेहयाई (निर्लज्जता) बढ़ती चली जा रही है। दुनया तो पहले ही इस बात के पीछे पड़ी हुई है कि वे लोग जो अपने धार्मिक निर्देशों पर चलने वाले हैं तथा विशेष रूप से मुसलमान हैं, उन्हें किसी प्रकार धर्म से दूर किया जाए।

इस्लाम विरोधी शक्तियाँ पूरा ज़ोर लगा रही हैं कि धार्मिक शिक्षाओं एवं प्रथाओं को मुसलमानों में से समाप्त किया जाए। ये लोग इस प्रयास में हैं कि धर्म को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अंतःकरण की स्वतंत्रता के नाम पर इस प्रकार समाप्त किया जाए कि उन पर कोई आरोप न आए कि देखो हम जबरन धर्म को नष्ट कर रहे हैं। हमें दुआओं पर भी ज़ोर देना चाहिए कि अल्लाह तआला इन शैतानी चालों का मुक़ाबला करने का हमें साहस और तौफ़ीक़ भी दे और हमारी सहायता भी फ़रमाए। यदि हम सत्य पर स्थापित हैं और निःसन्देह हैं तो फिर एक दिन हमारी सफलता भी सन्देह हीन है, इस्लाम की शिक्षा ने ही दुनया पर ग़ालिब आना है।

इस्लाम सदैव रहने के लिए है। क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाएँ क़्यामत तक के लिए हैं। इस लिए हमें बिना किसी हीन भावना के अपनी शिक्षाओं के अनुसार कार्य करने का प्रयास करना चाहिए तथा उस पर दृढ़ रहना चाहिए और दूसरों को भी बताना चाहिए कि तुम जो ये बातें करते हो, अल्लाह तआला की इच्छा के विरुद्ध हैं तथा विनाश की ओर ले जाने वाली हैं। इस्लाम कोई ऐसा धर्म नहीं जो इंसान को अनुचित प्रकार की पाबन्दियों में जकड़ देता है बल्कि आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षाओं में छूट की व्यवस्था भी है।

हम अहमदियों को सदैव यह याद रखना है कि यह ज़माना बड़ा भयानक ज़माना है। शैतान प्रत्येक छोर से भर पूर आक्रमण कर रहा है। यदि मुसलमानों, विशेष रूप से अहमदी मुसलमानों, पुरुषों, महिलाओं तथा नौजवानों, सबने धार्मिक प्रतिष्ठा को स्थापित रखने का प्रयास न किया तो फिर हमारे बचने की कोई गारन्टी नहीं। हम दूसरों से बढ़कर अल्लाह तआला की पकड़ में होंगे कि हमने हक़ को समझा, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें समझाया और हमने फिर भी अनुपालन न किया। अतः यदि हमने अपने आपको विनाश से बचाना है तो फिर प्रत्येक इस्लाम की शिक्षा के साथ विश्वस्त होकर दुनया में रहने की आवश्यकता है। यह न समझें कि प्रगति शील देशों के साथ चलने में ही हमारा स्थाइत्व है। उनकी प्रगति अपनी चरम सीमा को पहुंच चुकी है और अब जो उनकी गतिविधियाँ हैं, ये चीज़ें उन्हें पतन की ओर ले जा रही हैं तथा इसके संकेत ज़ाहिर हो चुके हैं। अल्लाह तआला की अप्रसन्नता को ये आवाज़ें दे रहे हैं तथा अपने विनाश को बुला रहे हैं। अतः ऐसे में मानव सहानुभूति के अंतर्गत हमने ही उनको उचित मार्ग दिखाकर बचाने का प्रयास करना है, बजाए इसके कि उनके रंग में रंगीन हो जाएँ। यदि उन लोगों का सुधार न हुआ जो उनके अहंकार तथा दीन से दूरी के कारण प्रत्यक्षतः बड़ा कठिन लगता है, फिर भविष्य के विश्व की प्रगति में वे क़ौमें अपनी भूमिका निभाएँगी जो शिष्टाचार तथा धर्म की प्रतिष्ठा को स्थापित रखने वाली होंगी। अतः जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि हमें, विशेषतः युवाओं को अल्लाह तआला की शिक्षाओं पर ध्यान देने की आवश्यकता है। दुनया से प्रभावित होकर उसके पीछे चलने के बजाए दुनया को अपने पीछे चलाने की आवश्यकता है। जैसा कि पर्दे और लिबास के विषय में मैंने बात आरम्भ की थी, इस संदर्भ में यह भी बात कहना चाहता हूँ और खेद पूर्वक कहना चाहता हूँ कि कुछ लोग कहते हैं कि क्या इस्लाम और अहमदियत के उत्थान के लिए पर्दा ही आवश्यक चीज़ है। कोई कहता है कि यह शिक्षा अब पुरानी हो चुकी है और यदि हमने दुनया का मुक़ाबला करना है तो इन बातों को छोड़ना होगा, नऊज़ु बिल्लाह। परन्तु ऐसे लोगों पर स्पष्ट हो कि यदि दुनयादारों के पीछे चलते रहे तथा उनके अनुसार जीवन व्यतीत करते रहे तो

फिर दुनया के मुक़ाबले के बजाए स्वयं दुनया में डूब जाएँगे। नमाज़ें भी धीरे धीरे ज़ाहिरी अवस्था में ही रह जाएँगी अथवा अन्य कोई नेकियाँ हैं या दीन के अनुसार कर्म है तो वह भी ज़ाहिरी अवस्था में रह जाएगा तथा फिर धीरे धीरे वह भी समाप्त हो जाएगा।

अतः अल्लाह तआला के किसी भी आदेश को तुच्छ नहीं समझना चाहिए, यह बड़ी भयावह स्थिति है। इस्लाम की प्रगति के लिए प्रत्येक वह चीज़ आवश्यक है जिसका ख़ुदा तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया है। पर्दे की पाबन्दियाँ केवल महिलाओं के लिए नहीं हैं। इस्लाम की पाबन्दियाँ केवल स्त्रियों के लिए नहीं हैं अपितु पुरुषों तथा स्त्रियों, दोनों के लिए आदेश है। अल्लाह तआला ने पहले पुरुषों को हया और पर्दे का तरीक़ा बताया। अल्लाह तआला फ़रमाता है-

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ अर्थात- मोमिनों को कह दे कि अपनी आँखें नीची रखें तथा अपने गुप्तांगों की सुरक्षा किया करें। यह बात उनके लिए अधिक पवित्रता का कारण है। निःसन्देह जो वे करते हैं अल्लाह सदैव उससे अवगत रहता है।

अल्लाह तआला ने मोमिनों को पहले कहा कि नज़रें नीची रखो, क्यूँ? इस लिए कि ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ क्यूँकि यह बात विशुद्धि के लिए अनिवार्य है, यदि विशुद्धि नहीं तो ख़ुदा नहीं मिलता। इस प्रकार महिलाओं के पर्दे से पहले पुरुषों को कह दिया कि प्रत्येक ऐसी चीज़ से जिसके द्वारा तुम्हारी भावनाएँ भड़क सकती हों, उनसे बचो।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- किसी अहमदी लड़की अथवा महिला को, किसी लड़के को किसी प्रकार की हीन भावना का शिकार होने की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम की शिक्षा ही है जिसने विश्व को शांति पूर्ण और अल्लाह की ओर बुलाने वाला बनाना है। दुनया को एक समय पर आभास हो जाएगा कि इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं कि इस्लाम की शिक्षा पर विचार करें तथा इसके अनुसार कर्म करें। पुरुषों को यह आदेश देने के बाद कि अपनी आँखें नीची रखो, महिलाओं का सम्मान करो फिर महिलाओं को विस्तार पूर्वक आदेश दिया कि तुमने भी अपनी आँखें नीची रखनी हैं तथा पर्दा किस प्रकार करना है तथा किस किस से करना है। यदि तुम इन बातों के अनुसार कार्य करोगी तो सफल हो जाओगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं- आजकल पर्दे पर हमले किए जाते हैं लेकिन ये लोग नहीं जानते कि इस्लाम में पर्दे का अभिप्रायः ज़िंदान नहीं अर्थात जेल नहीं है बल्कि एक प्रकार की रोक है कि ग़ैर मर्द तथा औरत एक दूसरे को न देख सकें, जब पर्दा होगा ठोकर से बचेंगे।

ज़ीनत (शोभा) प्रकट करने का आदेश जिनके सामने है, वह विस्तृत है। जो निकट सम्बंधी हैं, बहिन भाई हैं, पति है, बाप है, माँ है, उनके बच्चे हैं, उनके सामने केवल इतना है कि उनसे पर्दा नहीं है। मेकअप इत्यादि यदि हो सकता है तो उनके सामने तो ज़ाहिर हो सकता है, इनके अतिरिक्त नहीं। इसको विस्तार पूर्वक अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम में बयान फ़रमाया है कि जिनसे, और वह भी वह ज़ीनत है जो स्वयं प्रकट होती हो अर्थात चेहरा है, क़द काठ है इत्यादि इस प्रकार की ज़ीनत। यह अभिप्रायः नहीं है कि उनके सामने भी घर में तंग जीन्स और ब्लाऊज़ पहन कर फिर रही हों अथवा नंगा लिबास हो। यह पर्दा महरम (जिनसे पर्दे में छूट है) रिश्तेदारों के लिए भी है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक अन्य बात मैं मुरब्बियों तथा उनकी पत्नियों से भी कहूँगा कि वे भी अपने लिबास तथा अपनी नज़रों में अत्यधिक सावधानी करें उनके नमूने जमाअत देखती है। मुरब्बी तथा मुबल्लिग़ की पत्नि भी मुरब्बी होती है और उसको प्रत्येक बात में उत्तम उदाहरण क़ायम करना चाहिए। अल्लाह तआला करे कि हमारे पुरुष भी तथा हमारी महिलाएँ भी हया के उच्चतम स्तरों को क़ायम करने वाले हों तथा इस्लाम के आदेशों की हर प्रकार हम सब पाबन्दी करने वाले हों।